an>

Title: Need to fix the prices of agricultural produce at the rate of 1.5 times the cost of its production.

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे शून्य प्रहर में बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

देश का विकास किसानों के खेत से होकर गुजरता है। किसान ही देश का अन्नदाता है। वह स्वयं भूखा रहकर भी सब का पेट भरता है। सही मायने में किसान ही देश की असली रीढ़ है। किसानों से वायदा किया गया था कि उसकी फसल की लागत मूल्य का डेढ़ गुना लाभांश दिया जाएगा। पर, इस सरकार के नौ महीने हो गए हैं, पर यह पूरा नहीं हुआ। उल्टे केन्द्र सरकार ने मुट्ठी भर पूंजीपतियों को लाभ पहुंचाने के नाम पर किसानों की ज़मीन छीनने का जाल बुन दिया है। किसान आत्महत्या करने पर मज़बूर है। क्या यही है किसानों के लिए अच्छे दिनों की शुरूआत?

माननीय अध्यक्ष : प्लीज़, इस तरह न पढ़ें। आप क्या कहना चाहते हैं?

श्री कौशलेन्द्र कुमार: यह सरकार हर तरह से किसानों को पूताड़ित करने का काम कर रही है। आज देश के किसान बहुत ही परेशान हैं। आज बेमौसम बरसात होती है। कभी सूखा होता है तो कभी बाढ़ आती है।

माननीय अध्यक्ष : इस विषय पर नियम-193 के तहत चर्चा होगी।

श्री कौशलेन्द्र कुमार: मैं केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि किए गए वायदों के अनुरूप देश के किसानों की फसल की लागत मूल्य का डेढ़ गुना मूल्य उन्हें दिया जाए। साथ ही, बेमौसम बरसात से क्षतिपूर्ति का मुआवज़ा भी दिया जाए।